

DIRECT SEEDED RICE

A Cost-Effective Technology

धान की सीधी बोआई

एक लागत प्रभावी तकनीक



**G.B. Pant University of Agriculture & Technology,
Pantnagar (Uttaranchal)**

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,

पन्तनगर –263 145

उत्तरांचल



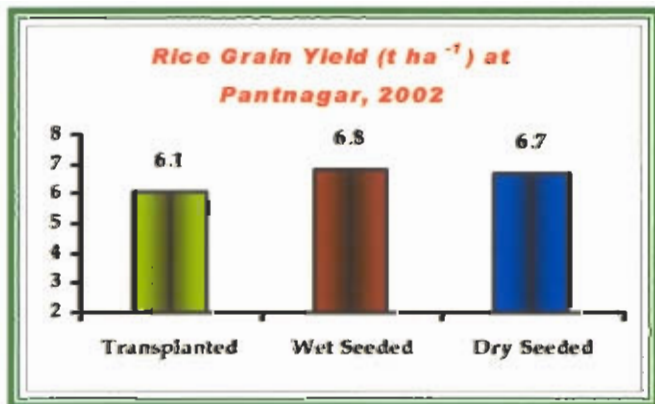
धान की सीधी बोआई

एक लागत प्रभावी तकनीक

उत्तरी भारत के सिंचित क्षेत्रों में धान की रोपाई की जाती है। रोपाई करने में बहुत श्रमिक लगते हैं व उनके लिए यह कठिन कार्य है। रोपाई से पहले खेत में पानी भरकर लेव लगाना होता है जिसमें पर्याप्त पानी की आवश्यकता होती है। श्रमिकों की कमी व बढ़ती मजदूरी से रोपाई में लागत बढ़ती जा रही है। साथ ही श्रमिकों व पानी की कमी से रोपाई देर तक (अगस्त तक) चलती रहती है जिससे धान की उपज कम हो जाती है। रोपाई के लिए कदेड़ करने से भूमि की भौतिक दशा पर बुरा प्रभाव पड़ता है जिससे अगली फसल मुख्यतः गेहूँ प्रतिकूल रूप से प्रभावित होती है। इस प्रकार इस तकनीक को अपनाकर मृदा की भौतिक दशा बनाये रखते हुए अगली फसल की उत्पादन लागत में कमी और उत्पादकता में वृद्धि सुनिश्चित किया जा सकता है। इन कारणों को ध्यान में रखकर रोपाई के स्थान पर सीधी बोआई करने के प्रयास किए गये हैं। उत्तरी भारत में भी विगत में धान की सीधी बोआई की जाती थी जिसमें खरपतवारों की समस्या अधिक होती थी और फसल की उपज कम होती थी। इन समस्याओं को ध्यान में रखकर पन्तनगर विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा ऐसी तकनीक विकसित की गई है जिसमें शाकनाशियों के उपयोग के साथ निकाई करके सीधी बोई गई फसल की अच्छी उपज ली जा सकती है, जो रोपाई की गई फसल के बराबर या अधिक होती है।

- श्रमिकों एवं पानी की कम आवश्यकता
- अधिक क्षेत्र में समय से बोआई
- फसल अवधि रोपाई की अपेक्षा ७-१० दिन कम

- उपज रोपाई की तुलना में अधिक या समान
- कदेड़ प्रक्रिया के भूमि पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव से बचाव
- उत्पादन लागत ₹० २५००/हे० कम





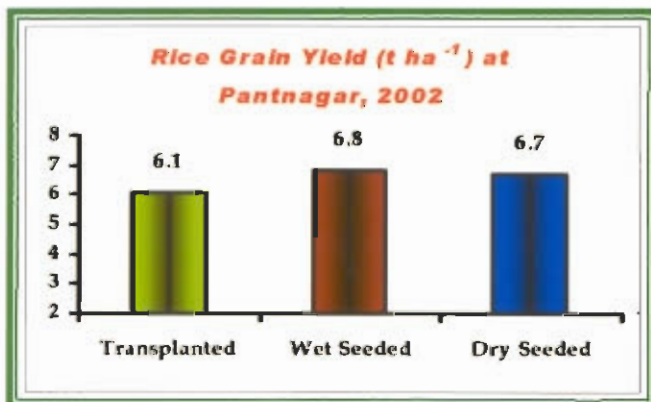
DIRECT SEEDED RICE

A Cost-Effective Technology

In irrigated rice production system, by and large, rice crop is raised by growing the seedlings in nursery and transplanting them in the main field. This practice of transplanting requires large number of laboureres in short time and the operation involves drudgery to the workers. With increasing wages, transplanting is becoming expensive and the work done on contract basis is not satisfactory often resulting in low plant population. Secondly, large volumes of water are required for puddling the field putting big drain on our water resources. Puddling of heavy textured soils may as well have adverse effects on the following crop mainly wheat. To address these concerns, scientists at Pantnagar have developed technology of direct seeding of rice with the help of a drill which ensures timely sowing of the crop with much less energy and water use. The productivity of the crop is comparable to that of the transplanted crop, but the profit margin is more.

- Reduced labour and water requirements
- Timely seeding on large scale
- Crop matures 7-10 days early

- Yield more or equal to transplanted rice
- No ill effects of puddling on follow crops
- Production cost reduced by Rs. 2500 ha⁻¹



Scientists develop new paddy strain

Hari Shanker Saxena
U. S. Nagar, July 29

RESEARCH ON development of technology for direct seeded paddy is being done by professor of agronomy, Dr Govindra Singh in collaboration with the Natural Resource Institute of England and the International Rice Research Institute, Philippines. Progressive farmers in U. S. Nagar and Rampur district of Uttar Pradesh have successfully adopted the technology package.

Dr Martin Mortimer and Dr David Johnson along with varsity scientists evaluated the impact of the technology in Bazpur, Kashipur and Bilaspur tehsils from July 19 to July 20. They have reported that excellent crops of direct seeded paddy has been grown by Dalvir Singh, P.P.S. Randhava, F.S. Rana, J.S. Brar, V.K. Sood, S.S. Kahlon, A.P. Singh, Gurucharan Singh and Nishant Singh.

These farmers said that the cost has been reduced from Rs 1500 to Rs 2000 per acre. Now, more farmers are going in for this technology.

Vice Chancellor Dr P. L. Gautam told *Hindustan Times* that the farmers had

Unlike traditional methods, in the direct seeded paddy, there is no need to grow seedlings in nursery beds and transplant them in the fields.

been motivated to use zero tillage seed drill machines and asked to use pendimethalin for weed control. Optimum seed depth and rate, fertiliser, plant population and weed management increase the yield of paddy and have reduced costs.

Unlike traditional methods, there is no need to grow seedlings in nursery beds and transplant them in the fields. The direct seed sowing method curtails time, drudgery and amount of water. He adds that more research work is to be carried out to find out suitable rice varieties for this system and appropriate water management technology. Dr Gautam said that water had to be saved as its level had been going down by the year.

शाहवास्तव

23 जुलाई 2005 5

नया प्रयास जो धान गेहूं फलस चक्र में लाएगा नया चमत्कार

संवाददाता
पंतनगर, 22 जुलाई।

कृषि विवि के वैज्ञानिकों ने गत तीन वर्षों से धान की सीधो बुवाई के लिए पैकज तैयार करने में सफलता हासिल की है। वास्तव में धान की सीधो बुवाई की खेती एक नई पद्धति है जिसमें बीज की गहराई, दूरी, उर्वरक का प्रयोग, खरपतवार नियंत्रण एवं प्रति इकाई क्षेत्रफल में पौधों की वांछित संख्या निर्धारित कर अधिक उपज लेने की रणनीति तैयार की जाती है। इस रणनीति में सीडरिडल एंव पैडमिथलीन का प्रयोग महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। धान की सीधो

बुवाई करने में विशेष समस्या खरपतवार की समस्या का हल नियंत्रण हो जाता है। सिंचित क्षेत्रों में इस विधि से धान की अधिक



खोजा जा चुका है। धान की बुवाई उपज प्राप्त की जा सकती है। अब के तुल्य परचल पैडमिथलीन को 1.25 लीटर प्रति एकड़ की दर से प्रयोग कर खरपतवारों का अच्छा खेत में लेव लगाकर रोपाईं की

जायें। खेत में लेव लगाना एक कठिन प्रक्रिया है। जिसमें ट्रैक्टर की काफी समय लगता है। उसी प्रकार श्रमिकों द्वारा कीचड़ में रोपाईं करना भी एक कठिन कार्य है। खेत में लेव लगाकर रोपाईं करने से पानी की अधिक आवश्यकता होती है।

डा. गोविन्द सिंह के नेतृत्व में इस परियोजना पर कार्य किया जा रहा है जिसके नेचुरल रिसोर्स इन्स्टीट्यूट इंग्लैंड व अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान मनीला का सहयोग प्राप्त है। गत वर्षों में इस तकनीक के प्रदर्शन किसानों के यहां किये गये जिसे अब किसानों ने अपनाना शुरू कर दिया है।

डा. मार्टिन व डा. जोहन्सन ने विवि के कुलपति प्रेम लाल गौतम से भेंट की और उन्हें किसानों की राय से अवगत कराया। डा. गौतम ने इस दिशा में और अनुसंधान पर बल दिया ताकि सीधो बुवाई के लिए उपयुक्त किस्मों का चुनाव हो सकें व उचित जल प्रबंधन की तकनीक ज्ञात हो सकें। खेती में जल की उपलब्धता कम होती जा रही है। और कम जल से अधिक उत्पादन लेने की दिशा में अधिक अनुसंधान की आवश्यकता होगी। वैज्ञानिकों की राय में अगले वर्षों में सीधो बुवाई का क्षेत्र काफी बढ़ेगा जिससे धान का उत्पादन आसान व सस्ता होगा।

रोपाई से अधिक कारगर है धान की सीधी बुवाई

विज प्रजिविधि, कन्नूर

का विज्ञानविद्यालय के वैज्ञानिकों ने निम्न तीन वर्षों के अत्यंत प्रचुर के बाद धान की सीधी बोआई की रोपाई की तुलना में अधिक कारगर पाया है। वैज्ञानिकों के अनुसार रोपाई की धारित हिले हुए धान की बोआई करने से उत्पादन पर कोई विपरीत असर नहीं पड़ता और उत्पादन स्थान में भी कारसे कमी आती है। वैज्ञानिकों के अनुसार रोपाई बोआई में आने वाली खराबताओं की समस्या को धान की बोआई के तुरंत बाद पैदाबिधस्तेर तथा के विज्ञान से दूर किया जा सकता है।

पंत विधि के वैज्ञानिकों के शोध का निष्कर्ष

पंत आज विदेशक प्रकार के काम में निर्माण क्षेत्रों में धान की खेती की इस विधि का खुलासा करते हुए विज्ञान विज्ञानिक एवं परिचालन अधिकारियों का गोविन्दा सिंह ने बताया कि अलग से धान की रोपाई करके एवं पानी भरने के बाद रोपाई हेतु खेत की तैयारी करना न केवल प्रयास है बल्कि इस प्रक्रिया में कृषि उपकरणों को भी ध्यान देना है। नवयुग विद्यार्थी इंजीनियर (इंजीनियर) एवं अन्वेषण



धान की सीधी विधि से बोई फसल को निहारना एक किसान।

जागरण

धान अनुसंधान संस्थान, पानीना (विश्वेश्वर) के सहयोग से डॉ. गोविन्दा सिंह के नेतृत्व में खान ग्री परिचालन के अन्तर्गत बोने वर्ष निष्कर्षों कासकरी की भूमि पर प्रदर्शन किये गये। इस प्रदर्शन की सफलता से उत्साहित निष्कर्षों किसानों ने इस विधि को अपनाता शुरू कर दिया है।

उक्त विदेशी संस्थानों के वैज्ञानिक डॉ. चार्ल्स चोर्चियर एवं डॉ. डेविड जूनसन ने पंत विधि के वैज्ञानिकों के साथ पिछले 19-20 जून को काजपुर, काशीपुर एवं चित्तलपुर क्षेत्र के सीधरी बलवीर सिंह, श्रीधरी प्रजिविधि सिंह, पन्ना, पन्ना सिंह एवं, निष्के कुमार मुट, मुन्दी सिंह बहलो

कुलवीर सिंह बहलो, अमृतपाल सिंह, गुरुपाल सिंह, निष्के सिंह एवं जयदीप बहल आदि के खेतों में उक्त विधि में बोई गयी धान की फसल की विशेष रूप से साहजवीय एवं उत्पादनक बताया। कारखानों की रूप में इस विधि से बोई गयी फसल में रोपाई विधि की तुलना में खाने डेढ़ से दो हजार की फसल होती है जबकि उत्पादन में कोई अंतर नहीं आता। मूलभूत खानेपाल गोठर ने विधि के वैज्ञानिकों की इस उपलब्धि पर प्रशंसा व्यक्त करते हुए इस विधि से बोआई हेतु धान की उन्नत प्रजातियों एवं जन प्रत्येक आधुनिक शोध कारखानों के संशोधन को समाप्त की है।

मुख्य वैज्ञानिक डॉ. गोविन्दा सिंह के 37-पुस्तक वर्गीय रूपाने के मुख्य सहायक जून के पहले माह में ही इस विधि से खेत में बोआई की जाती है। बोआई के क्रम में साइर से नष्टन की दूरी 20 सेंटी म महराई 3 सेंटी म रखी जाती है। फसल की नष्टनकर आकारकाल 120 से 150 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है। पन्नापेरा एवं पेटात की मात्रा का निर्धारण पिछली की मात्रा के आधार पर की जाती है। अन्य किसानों साधन फसल की धारित की जाती है।

धान-गेहूं फसल चक्र में नया चमत्कार

पंतनगर का प्रयास-सिंचित क्षेत्रों में धान की सीधी बुआई

पंतनगर, पंत कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने गत तीन वर्षों में धान की सीधी बुवाई के लिए पैकेज तैयार करने में सफलता हासिल की है। वास्तव में धान की सीधी बुवाई की खेती एक नयी पट्टति है जिसमें बीज की गहराई, दूरी उर्वरक का प्रयोग, खरपतवार नियंत्रण एवं प्रति इकाई क्षेत्रफल में पौधों को वांछित संख्या निर्धारित कर अधिक उपज लेने की रणनीति तैयार की जाती है। इस रणनीति में सोडियम एवं पेंटाथिथलीन का प्रयोग महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। धान की सीधी बुवाई करने में समस्या खरपतवारों को होती है जिसका हान खोजा जा चुका है। धान की बुवाई के तुरन्त पश्चात पेंटाथिथलीन को 1.25 लीटर प्रति एकड़ की दर से प्रयोग कर खरपतवारों का अन्त्र नियंत्रण हो जाता है। सिंचित क्षेत्रों में इस विधि से धान की अधिक उपज प्राप्त की

जा सकती है। अब यह आवश्यक नहीं रह गया है कि धान की पौध तैयार की जाये व खेत में लेव लगाकर रोपाई की जाय। खेत में लेव लगाना एक कठिन प्रक्रिया है जिसमें ट्रैक्टर का काफी समय लगता है। उसी प्रकार श्रमिकों द्वारा कीचड़ में रोपाई करना भी एक कठिन कार्य है। खेत में लेव लगाकर रोपाई करने में अधिक पानी की आवश्यकता होती है। डा. गोविन्दा सिंह के नेतृत्व में इस परियोजना पर कार्य किया जा रहा है। जिसमें नेचुरल रिसोर्स इन्स्टीट्यूट इंग्लैंड व अन्तर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान पनीला का सहयोग प्राप्त है। गत वर्षों में इस तकनीक के प्रदर्शन किसानों के यहां किये जिसे अब किसानों ने इसे अपनाया शुरू कर दिया है। इस विधि से 20 किलो प्रति एकड़ बीज की आवश्यकता होती है जिसको मशीन से 2 सेंमी की गहराई पर बोया

जाता है जोआई के पहले खेत को भली भांति तैयार करके होता है इसमें लाइन से लाइन की दूरी 20 सेंमी रखी जाती है। साथ बाजपुर, काशीपुर व बिलासपुर क्षेत्र के किसानों के यहां प्रमण किया। चौ. दलवीर सिंह चौ. प्रेम प्रीत सिंह रंधावा, श्री फतह सिंह राणा, श्री विवेक कुमार, सुरेन्द्र सिंह कहलौं, श्री कुलवीर सिंह कहलौं, श्री अमृत पाल सिंह, श्री गुरुचरण सिंह, श्री निशान्त सिंह व श्री जयदीप सिंह बार के खेतों में अच्छी फसल देखी। इन किसानों ने सीधी बुवाई के प्रति बड़ा उत्साह था। इन किसानों ने बताया कि सीधी बुवाई करने से प्रति एकड़ रु. 1500-2000 की बचत होती है। और धान की उपज उतनी ही मिलती है। जितनी की रोपाई से कुछ किसानों को गत वर्ष प्रदर्शन में सीधी बुवाई से अधिक उपज प्राप्त हुई। परिणाम स्वरूप अधिकांश

किसानों ने अगले वर्ष अपनी पंजाब में इसी विधि से धान लगाने का मन बनाया है। क्षेत्र के बहुत से किसान इन खेतों को देखकर अगले वर्ष इस विधि को अपनाना चाहते हैं। डा. मार्टिन व डा. जोहन्स ने विश्वविद्यालय के कुलपति डा. प्रेमपाल गीतम से भेंट की और उन्हें किसानों को राय से अवगत कराया। डा. गीतम ने इस दिशा में और अनुसंधान पर बल दिया ताकि सीधी बुवाई के लिए उपयुक्त किस्मों का चुनाव हो सके व उचित जल प्रबंधन की तकनीक प्राप्त हो सके। खेत में जल की उपलब्धता कम होती जा रही है और कम जल से अधिक उत्पादन लेने की दिशा में अधिक अनुसंधान की आवश्यकता होगी। वैज्ञानिकों को राय में अगले वर्षों में सीधी बुवाई व क्षेत्र काफी बढ़ेगा जिससे धान का उत्पादन आसान व सस्ता होगा।

गेहूं की तरह सीधे उगाइए धान

अगर उनाला बूटो

पंतनगर (ऊधमसिंह नगर)। धान की परंपरागत बुवाई को अलविदा कहने के दिन आ गए हैं। पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने ऐसी तकनीक ईजाद कर ली कि धान भी गेहूं की तरह सीधे खेत में बो दिया जाए। न पौध लगाने का झंझट, न ही लेव लगाकर रोपने का। सबसे बड़ी बात तो यह कि इसमें पानी की भी उतनी जरूरत नहीं, जितनी परंपरागत तरीके में। बुवाई भी सस्ती और पैदावार भी कुछ ज्यादा ही। यूपी में बिलासपुर और उत्तरांचल में काशीपुर और आजपुर में नई तकनीक के ट्रायल हो चुके हैं और किसान भी इसे हाथों हाथ ले रहे हैं।

इंग्लैंड और फिलीपींस के कृषि विशेषज्ञ भी इस तकनीक में खासो रुचि ले रहे हैं और आजकल इलाके के किसानों में नई तकनीक से बोई गई धान का अध्ययन करने आए हुए हैं।

धान की सीधी बुवाई खासि नई तकनीक है। इसमें बीज ड्रिल मशीन से बोए जाते हैं। बीज की गहराई, दूरी, उर्वरक का प्रयोग, खरपतवार नियंत्रण एवं प्रति इकाई क्षेत्रफल में पौधों की वांछित संख्या निर्धारित कर अधिक उपज लेने की तरकीब बनाई जाती है। इसमें सोडियम और पेंडिमिथलीन का इस्तेमाल खाद्य भूमिका रखा है। धान की सीधी बुवाई करने में सबसे बड़ी दिक्कत है, खरपतवार को रोकना। इसका भी हल ढूंढा गया है।



आजपुर के गुरुचरण ने धान की सीधी बुवाई की।

बुवाई के तुरंत बाद पेंडिमिथलीन को 1.25 लीटर प्रति एकड़ की दर से इस्तेमाल कर खरपतवार काबू में आ जाता है। सिंचित क्षेत्रों में इस विधि से धान की ज्यादा पैदावार ली जा सकती है। विधि के संयुक्त निदेशक (शोध) डा. गोविंदा सिंह के नेतृत्व में इस प्रोजेक्ट पर काफी काम हो चुका है।

परियोजना को 'नेचुरल रिसोर्स इंस्टीट्यूट इंग्लैंड' और अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान मनीला का सहयोग मिला है। इन संस्थानों के वैज्ञानिकों डा. मार्टिन मोर्तिपर और डा. डेविड जॉनसन ने इसी सप्ताह पंतनगर विवि के वैज्ञानिकों के साथ आजपुर, काशीपुर और बिलासपुर क्षेत्र के उन खेतों को देखा, जहां किसानों ने नई तकनीक से धान बोया है। दलवीर सिंह, प्रेमप्रताप सिंह रंभावा, फतह सिंह राणा, विवेक कुमार सूद, सुरेंद्र सिंह कहलौं, कुलवीर सिंह कहलौं, अमृत पाल सिंह, गुरुचरण सिंह, निशांत सिंह और जयदीप सिंह बरार के खेतों में अच्छी फसल देखी गई। किसानों ने बताया कि सीधी बुवाई करने से प्रति एकड़ 1500-2000 रुपये की बचत होती है और धान की उपज उतनी ही मिलती है जितनी रोपाई से।

डा. मार्टिन और डा. जॉनसन ने पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. प्रेमशाल गौतम से भी भेंट की। डा. गौतम ने इस दिशा में और अनुसंधान पर जोर दिया ताकि सीधी बुवाई के लिए उपयुक्त किस्मों का चुनाव हो सके व उचित जल प्रबंधन की तकनीक ज्ञात हो सके। वैज्ञानिक मानते हैं कि खेती में पानी की उपलब्धता घट रही है और कम पानी में अधिक पैदावार लेने के लिए यह तकनीक कारगर साबित होगी। इस तकनीक से उत्साहित कृषि वैज्ञानिक मानते हैं कि अगले कुछ साल में धान की बुवाई का परंपरागत नजारा बिल्कुल बदल जाएगा।

रोपाई की जगह बुआई से धान उगाने की नई तकनीक

प्रदर्शन देख काश्तकारों की आंखों में चमक

निज प्रतिनिधि पंतनगर

पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश व इधर उत्तरांचल में अब रोपाई की जगह सीधे बुआई की नई तकनीक के साक्षात् दर्शन कर यहां काश्तकारों के आंखों में चमक आ गयी। राइस-व्हीट कन्सोर्टियम, नई दिल्ली के सौजन्य से आयोजित ट्रेनिंग सेमीनार में यह जानकारों मिलने पर कि इस नई तकनीक से रोपाई के झाड़ के अलावा कम लागत भी आती है, किसान, खासे उत्साहित दिखाई दिये। इस सेमीनार में इन चारों राज्यों के वैज्ञानिक और काश्तकार शिरकत कर रहे हैं।

इन लोगों ने यहां पंत विश्वविद्यालय के भ्रमण के दौरान अन्य शोध इकाइयों के साथ ही फसल अनुसंधान केन्द्र पर किये गये धान की सीधी बुआई से संबंधित परीक्षणों एवं प्रदर्शनी का विशेष रूप से अवलोकन किया। इस पद्धति में धान को बिना कटेड़ किये सीधे खेत में सोड ड्रिल के माध्यम से बोया जाता है। इसके लिए विशेष पैकेज

पंत विवि के वैज्ञानिकों द्वारा विगत तीन वर्षों के अथक प्रयास से शस्य वैज्ञानिक डा. गोविन्द सिंह के नेतृत्व में तैयार किया गया है। इस विधि को अपनाने से धान की पैदावार रोपाई किये गये धान के बराबर ही आती है, परन्तु लागत में दो ढाई रुपये प्रति हजार हैक्टर की कमी आती है।

सफल प्रदर्शनों के आधार पर इस पद्धति से इस वर्ष लगभग 150 एकड़ क्षेत्र में प्रगतिशील किसानों ने धान की बुआई की है। इस विधि को अपनाने वाले बाजपुर के निवेक कसूद, सजीव मूद, निशांत सिंह, कुलवीर सिंह कहलो, जसवीर सिंह कहलो एवं सुरेन्द्र सिंह कहलो के खेतों पर जाकर भी उका दल के वैज्ञानिकों एवं किसानों ने जानकारी प्राप्त की। ज्ञात हो, धान की सीधी बुआई पद्धति का विकास नेचुरल रिसोर्स इन्स्टीट्यूट इंग्लैण्ड व अंतर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान मनीला (फिलीपिन्स) द्वारा वित्त पोषित शोध परियोजना के अंतर्गत त्रिवि में किया गया है।

धान के जीन कोष से खुलेगा नई किस्मों का खजाना

राज टाइम्स

टाइम्स ब्यूरो

पटना (उ.प्र.), 7 अक्टूबर

भारत के धान के 12 गुणसूत्रों में से चारोंहूँ गुणसूत्र को लंबी भुजा का बर्णक्रमीय मॉलस करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। धान के सभी 12 गुणसूत्रों में लगभग 43 करोड़-बेस पेयर (समाचार युग्म) होते हैं। इन चार दिसेंबर के अंत तक 11 वं गुणसूत्र के 120 समाचार युग्मों का ड्रम धारत द्वारा ज्ञाते कर लिया जाएगा।

गोविन्द बल्लभ पंत कोष एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालयों में चल रही धान की समगतिशील सौंधी के आई की प्रवृत्ति का विकास मानक कार्यशाला में भाग लेने इरी फिलीपीन्स में आयी खरपतकार निबंधन विशेषज्ञ डा. माटिन मार्टिन्स, डॉ. शाह टाइम्स' के संवाददाता से श्रोत करते हुए कहा कि खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा

के लिये धान के जीव कोष का ज्ञान मानव कल्याण को मार्ग प्रशस्त करेगा। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान मनाला फिलीपीन्स के महानिदेशक डा. रोनाल्ड पो.केण्टेल का मानना है कि अंतर्राष्ट्रीय अभियान में भारत सहित विश्व के दस से अधिक देश सहयोग कर रहे हैं।

डा. माटिन मार्टिन्स ने कहा कि धान को वह जीवन

बुडली इटलेट पर सबको सुलभ रहनी और दुनिया भर के धान प्रजनक उसके आधार पर रंग रोधी कोट रोधी, सरकारीरोधी लवणता रोधी वंशानुओं के साथ-साथ अधिक पोषण प्रदान करने वाले जीन पता कर सकेंगी लगभग आधे दुनिया 2-6 अरब लोग चावल पर निर्भर हैं और बढ़ती जनसंख्या के लिये जीन कोष के आधार पर अधिक पोषक चावल उपलब्ध किया जा सकता।

गोतलब है कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के लगभग 250 वैज्ञानिकों के सहयोग से इरी के 44 वैज्ञानिक संकर धान के आनुवंशिक संसाधनों के विकास एकोकृत कोट तथा पोषक तत्व प्रबंध तथा जल प्रबंध आदि सभी महत्वपूर्ण पात्रों में काम कर रहे हैं। मानव संसाधन विकास के क्षेत्र

इरी, फिलीपीन्स से आये खरपतकार निबंधन विशेषज्ञ डा. माटिन मार्टिन्स' से विशेष भेटवाली

में इरी का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पिछले वष लगभग 800 भारतीय वैज्ञानिक की प्रयाणशालाओं में उच्च अध्ययन और अनुसंधान के लिये जा चुके हैं तथा इरी के वैज्ञानिक भारत आकर धान संबंधी शोध में हाथ बंटाते रहे यह आदान-प्रदान लगातार जारी है। कार्यशाला के आयोजक एवं परियोजना अधिकारी डा. गोविन्द सिंह ने परियोजना की जानकारी

देते हुए बताया कि पतनगर विश्वविद्यालय इरी फिलीपीन्स तथा एनआरआई, ब्रिटेन के संयुक्त संचालन में चल रही इस तीन वर्षीय परियोजना के दौरान पिछले दो वर्षों में पतनगर विश्वविद्यालय निकटवर्ती ग्राम नारायणपुर, सूयनगर बाजपुर और देवरिया जनपद (उ.प्र.) ग्राम मकसुदपुर बरलो तथा

बिलामपुर (यमपुर) के किसानों के खेतों पर ट्यूबल

में पाया गया कि अगर खरपतकार निबंधन हो जाय तो धान की सीध के आई रोगों के मुकाबले अधि क लाभप्रद हो सकती है। डा. गोविन्द सिंह ने बताया कि रोगों विधि न केवल अधिक चरणों वाली और मंहगी है बल्कि उसके बाद गेहूँ की पैदावार भी बोन में देरी होने के कारण प्रभावित होती है। उन्होंने जानकारी दी कि अभी सरजू-52 बे रत्ना तथा नरद-359

प्रजातियाँ सीधो-बोआ. के लिये प्रयोग में लाई जा रही है। डा. सिंह ने सीधी बोआई के लिये बासपती तथा धान की अन्य प्रजातियाँ खोजा जाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि वह धान छिटकबा खतो आधारित विभिन्न फसल प्रदर्शनों के परिणाम से उत्साहित है। उनके अनुसार संबंधित कारतक्यों ने की अनेक शोध कार्यक्रमों को बढ़ावा देने में जिस प्रकार रुचि दिखाई है वह उसकी जागरूकता ही दर्शाती है।

परियोजना के वैज्ञानिकों के साथ डा. माटिन मार्टिन्स एनआरआई ब्रिटेन के वैज्ञानिक डा. डी.ई. जानसन शॉरल साइंटिस्ट मिस बुआग हाइट, आदि ने ग्रम नायायणनगर, सूयनगर, देवरिया एवं फसल अनुसंधान केंद्र पर लगी फसल प्रदर्शनों का अवलोकन किया। इस अवसर पर डा. बी.पी. सिंह, डा. आरएस श्रीवास्तव, एवं डा. आरक सिंह भी मौजूद थे।

अब धान की सीधी बुवाई कर सकेंगे किसान

रोपाई से छुटकारा, श्रम, पानी, समय और उपकरणों के रखरखाव में बचत

अमर उजाला ब्यारे

पई टिफ्टी। गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं जल संसाधन विभाग के प्रधान सचिव डॉ. गोविंद सिंह के वरिष्ठ सहायक अनुसंधान के अतिरिक्त, डॉ. अशोक कुमार ने कहा कि रोपाई करने पर जल का खर्च कम होता है। इससे पानी की आवश्यकता कम होती है। इससे किसानों को अधिक लाभ मिलेगा।

इस तरह का तकनीक अपनाते हैं, जिसे विश्वविद्यालय के प्रमुख निदेशालय प्रमुखों में 15 मार्च से 18 मार्च तक राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर रोपाई करने का प्रबंध किया जा रहा है।

उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में धान की रोपाई करने का प्रबंध रजिस्ट्रारों के माध्यम से किया जा रहा है। इससे किसानों को अधिक लाभ मिलेगा। इससे पानी की आवश्यकता कम होती है। इससे किसानों को अधिक लाभ मिलेगा।

इससे रोपाई के समय पर न होने से धान की उपज कम हो जाती है। इससे किसानों को अधिक नुकसान हो सकता है। इससे किसानों को अधिक नुकसान हो सकता है।

इससे रोपाई के समय पर न होने से धान की उपज कम हो जाती है। इससे किसानों को अधिक नुकसान हो सकता है। इससे किसानों को अधिक नुकसान हो सकता है।

तकनीक में खेत को तैयार कर खेत में खेत लगाकर अंकुरित बीजों को, इस नौडूंग द्वारा बोया जाना जरूरी है।

इसे संबंध में कृषि विज्ञान केंद्र के सह निदेशक और प्रशिक्षण अधिकारी डॉ. कांडवाल बताते हैं कि उक्त तकनीक के लिए कृषि विश्वविद्यालय तैयार संघ में रोपाई कर रहा था। जिसके अध्येतियों में आने से किसानों को इस तरह की तकनीक अपनाने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा निदेशालय द्वारा संतानार (उपम सिंह नगर) में 15 मार्च से 18 मार्च तक चार दिवसीय राष्ट्रीय किसान दिवस आयोजित किया जा रहा है।

Pantnagar CD dedicated by Agriculture Minister

14 बरेली, शनिवार, 6 मार्च, 2004

अमर उजाला

कृषि मंत्री ने किया पंतनगर की सीडी का लोकार्पण

अमर उजाला ब्यूरो

पंतनगर (ऊधमसिंह नगर)। केन्द्रीय कृषि मंत्री राजनाथ सिंह ने कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की नई दिल्ली में हुई बैठक में पंतनगर के पांच दशक विषय पर विवि द्वारा बनाई गई सीडी तथा धान की बुआई नामक प्रपत्र का लोकार्पण किया।

सीडी में कृषि विवि की संकल्पना, पंतनगर विश्वविद्यालय के उद्भव के इतिहास इसके विकास तथा पिछले 43 वर्ष

की यात्रा में प्राप्त की गई महत्वपूर्ण उपलब्धियों की जानकारी ऐतिहासिक व बहुमूल्य चित्रों के साथ प्रस्तुत की गई। सीडी में विवि के विभिन्न दीक्षांत समारोहों में आई विभूतियों तथा उनके संभाषणों का संकलन एवं आज की बदली हुई परिस्थितियों में विवि के शिक्षण, शोध एवं प्रसार कार्यक्रमों में आए बदलाव की भी सचित्र प्रस्तुति की गई है।

धान की सीधी बुआई तकनीक पर प्रकाशित प्रपत्र में इस विधि को किसानों द्वारा अपनाए जाने पर बुआई की लागत में आने वाली कमी व इस विधि को अपनाने के तरीकों, इससे होने वाले लाभों का वर्णन किया गया है। बताया गया है कि श्रमिकों व पानी की कमी की परिस्थितियों में भी धान की समय से बोआई कर कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इस अवसर पर कृषि मंत्री ने पंतनगर विवि को जेआरएफ परीक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर शीलड प्रदान की।